छंद

- छंद शब्द संस्कृत के 'चद्' धातु से बना है, जिसका शाब्दिक अर्थ खुश करना होता है, अर्थात अक्षरों की संख्या, मात्रा , गणना , गति को क्रमबद्ध तरीके से लिखना छंद कहलाता है।
- छंद का दूसरा नाम पिंगल है क्योंकि छंदशास्त्र के रचयिता आ. पिंगलमुनि है।
- छंद का सर्वप्रथम उल्लेख 'ऋग्वेद' में मिलता है।

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

छंद का कार्य –

- छन्दबद्ध रचनाएँ सरलता से कण्ठस्थ हो जाती है।
- छन्द के कारण काव्य में गेयता आ जाती है।
- छन्द से काव्य का प्रभाव बढ़ जाता है।

छंद के प्रमुख अंग

1.पद/चरण

2.वर्ण और मात्रा

3.गण (गिनना)

4.गति (बहाव)

5. यति (विराम)

6.तुक (लय)

छंद क प्रकार –

1. मात्रिक छंद
2. वर्णिक छंद
3. मुक्तक छंद

1. मात्रिक छंद– i) सममात्रिक छंद– 6

ii) अर्द्धसममात्रिक छंद–4

iii)विषम मात्रिक छंद–2

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

(सममात्रिक छंद) (चार चरण)

चौपाई	रोला	गीतिका	सरसी	हरिगीतिका	आल्हा
(16)	(24)	(26)	(27)	(28)	(31)
(प्रत्येक में 16 मात्राएँ)	(यति–11–13) i & iii – 11 मात्राएँ ii & iv – 13मात्राएँ	(यति–14–12) i & iii – 14मात्राएँ ii & iv–12मात्राएँ	(यति–16–11) i & iii – 16 मात्राएँ ii & iv –11मात्राएँ	(यति–16–12) i & iii – 16 मात्राएँ ii & iv –12मात्राएँ	(यति–16–15) i & iii – 16 मात्राएँ ii & iv –15मात्राएँ

सोरठा के सामान्य ही रोला छन्द होता है। लेकिन सोरठा अर्द्धमात्रिक छंद के अर्न्तगत आता है

अर्द्धसममात्रिक छंद (चरण चार)

दोहा	सोरठा	बरवै	उल्लाला
24	24	19	28
यति –13–11	यति –11–13	यति –12–7	यति –15–13
i & iii –13मात्राएँ	i & iii –11मात्राएँ	i & iii –12मात्राएँ	i & iii –15मात्राएँ
ii & iv –11मात्राएँ	ii & iv –13मात्राएँ	ii & iv –7मात्राएँ	ii & iv–13मात्राएँ

- अवधी भाषा का निजि छंद बरवै को माना जाता है।

विषममात्रिक छंद (चरण छः)

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

कुण्डलिया	छप्पय
(रोला+दोहा)	(रोला+उल्लाला)
24 + 24	24 + 28
(यति 11–13) + (यति 13–11)	(यति 11–13) (यति 15–13)
	प्रथम चार चरण – रोला छंद
	अंतिम दो चरण – उल्लाला छंद

- विषममात्रिक छंद को संयुक्त छंद भी कहा जाता है।
- प्रथम व अंतिम शब्द सामान होते है।

2. (वर्णिक छंद)

- घनक्षरी – रूपघनाक्षरी – (32) –8–8 –8–8 मात्राएँ
  देवघनाक्षरी –(33)–8–8–8–9 मात्राएँ

सवैया–

- मदिरा–22 वर्ण
- मत्तगयंद–23 वर्ण
- दुर्मिल–24 वर्ण
- सुन्दरी–25 वर्ण

3..मुक्तक छंद–

- कविता का वह रूप जो किसी छन्दविशेष के अनुसार नहीं रची जाती है न ही तुकान्त होता है, वह मुक्तक छंद कहलाता है।
- हिन्दी में मुक्तक छंद के प्रवर्तक सूर्यकांत त्रिपाठी निराला जी को माना जाता है।

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

जैसे– वह तोड़ती पत्थर
देखा मैंने उसे,
इलाहाबाद के पथ पर।।